हिन्दी में कालिदास

प्रभात कुमार मिश्र

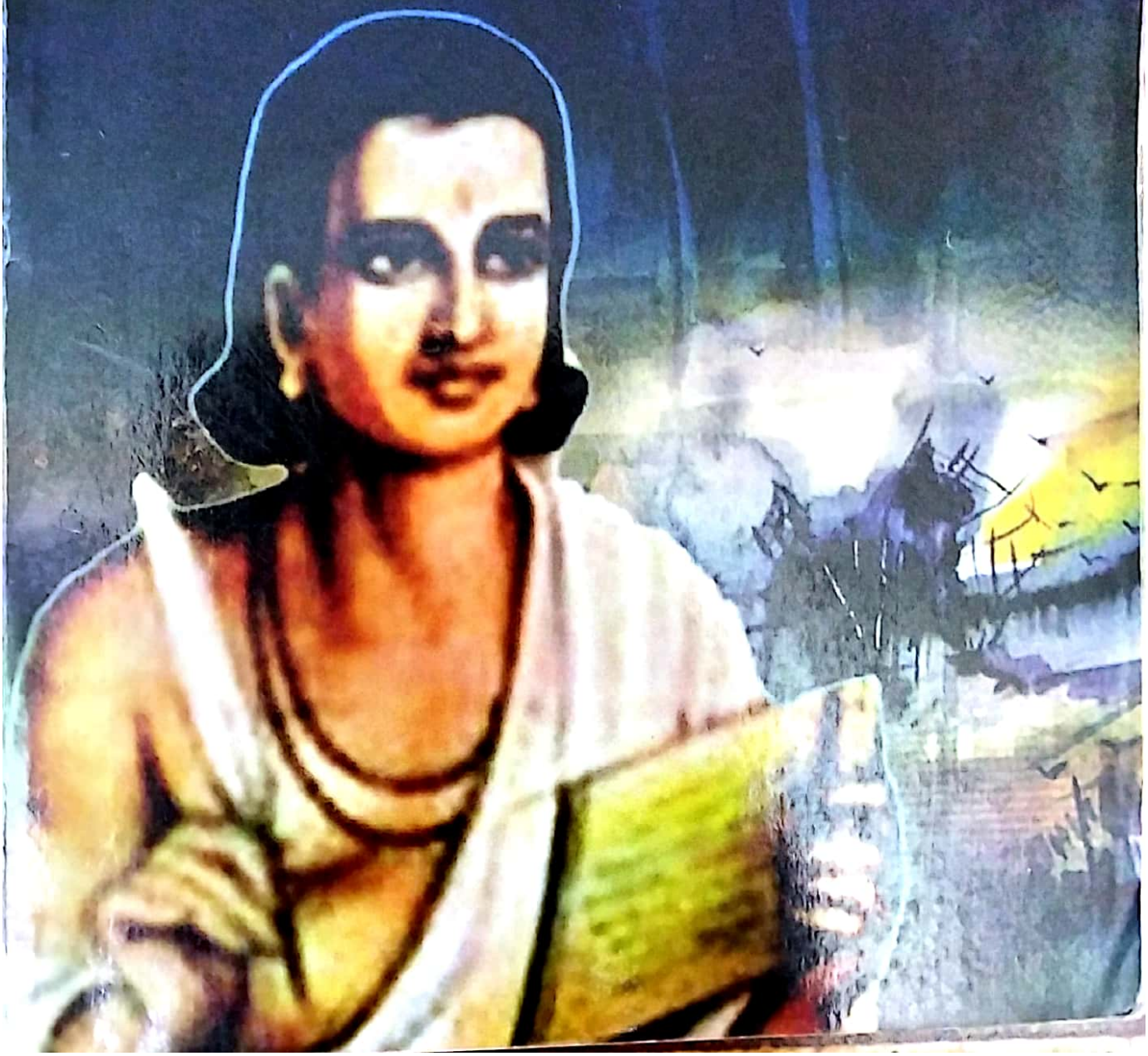

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

	प्रवेशिका	3
1.	काव्यानुवाद एवं रूपांतरण	9
2.	गद्यानुवाद एवं पुनर्रचना	44
3.	मौलिक पद्य रचनाएं	75
4.	मौलिक गद्य रचनाएं	105
5.	आलोचनात्मक रचनाएं	144
6.	शोध-अनुसंधान	192
7.	व्याख्या, टीका एवं भाष्य आदि	209
	अन्ततः	215

Scanned by CamScanner

अध्याय एक

काव्यानुवाद एवं रूपांतरण

मेघदूत-राजा लक्ष्मण सिंह

'मेघदूत' के इस हिन्दी पद्यानुवाद का प्रकाशन 1884 में हुआ था। 'मेघदूत' के पहले हिस्से 'पूर्वमेघ' की भूमिका में राजा लक्ष्मण सिंह ने लिखा है कि "उपमा अलंकार में कालिदास से बढ़कर अब तक कोई कवि भारतवर्ष में नहीं हुआ और उनके ग्रन्थों में 'मेघदूत' भी इसी अलंकार की उत्कृष्टता के कारण सराहने योग्य गिना जाता है। इस छोटे से काव्य को पढ़कर पढ़नेवाले के चित्त पर अंक-सा हो जाता है कि विधाता ने कालिदास को कितनी बड़ी कल्पनाशक्ति दी थी। मनुष्य की प्रकृति जानने और स्थान का वर्णन करने और स्वभाव का लालित्य दिखाने में यह कवि एक ही हुआ है। मेघदूत का अवलोकन करने से ये उत्तम गुण कालिदास के भली भांति दीखते हैं। उनके वाग्विलास की बड़ाई जितनी की जाय थोड़ी है। इस काव्य का प्रकरण संक्षेप में यह है कि कोई यक्ष अपने काम में असावधान हो गया। तब उसके स्वामी कुबेर ने कोप कर उसे बरस दिन के लिए देश निकाला दिया। इस शाप के वश वह अलकापुरी को छोड़ दक्षिण में रामगिरि पर्वत पर अकेला जा रहा। जब उस पहाड़ में रहते कुछ दिन बीत गये और आषाढ़ का बादल उमड़ा, उस विरही को अपनी स्त्री की बहुत सुधि आई, उसने मन में सोचा कि प्यारी के पास कुछ कुशल का सन्देसा भेजना चाहिए। बादल के सामने खड़ा हुआ इसी सोच-विचार में था कि प्रेम की अधिकता में विह्वल हो गया, बादल को ही दूत बना कर अलकापुरी का मार्ग बताने और अपना संदेसा सुनाने लगा। रामगिरि से अलका तक जो-जो नदी और पहाड़ और तीर्थ और मुख्य-मुख्य नगर और देश हैं उनका थोड़ा-थोड़ा पता देता गया है। पहले पैंसठ श्लोकों में अलका तक पहुंचाया गया है इसी का नाम 'पूर्वमेघ' है, फिर 'उत्तर मेघ' के इक्यावन श्लोकों में अलकापुरी की शोभा और यक्षिणी की दशा वर्णन करके अपना संदेसा बतलाया गया है। निदान जब बादल से कहे हुए संदेसे का वृतान्त कुबेर के कान तक पहुंचा उसने दयालु होकर यक्ष का अपराध क्षमा कर दिया और

Scanned by CamScanner

प्राच्यवाद और हिन्दी नवजागरण

प्रभात कुमार मिश्र

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना	07
प्राच्यवाद : अर्थ और इतिहास	019
भारत में प्राच्यवाद : व्यक्ति और संस्थाएँ	031
हिन्दी नवजागरण : अवधारणा और स्वरूप	060
प्राच्यवाद और 'भारत' : खोज और पहचान	088
प्राच्यवाद और हिन्दी नवजागरण : स्वीकार और प्रतिकार	108
सन्दर्भ-ग्रन्थ	121

Scanned by CamScanner

प्राच्यवाद : अर्थ और इतिहास

प्राच्यवाद पूरब के समाजों, उनकी संस्कृतियों, भाषाओं आदि का पश्चिम के विद्वानों द्वारा किया गया अध्ययन है। इसे पश्चिमी दुनिया में लेखकों, कलाकारों एवं डिजायनरों द्वारा पूरबिया संस्कृति के अनुकरण या चित्रण के बतौर भी समझा गया है। पहले वाले अर्थ में प्राच्यवाद पद बहुत हद तक नकारात्मक संदर्भ रखता है। नकारात्मक इसलिए कि प्रायः इसे अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय साम्राज्यवाद के दौर में निहित उद्देश्यों से पश्चिमी लोगों द्वारा अध्ययन के बहाने पूरब की मनचाही निर्मित्ति (Shaping) से जोड़ा गया है। हालांकि उत्तरऔपनिवेशिक अकादमिक जगत में अब इस शब्द का अर्थ पूरब की मनचाही निर्मित्ति से नहीं लिया जा रहा और ऐसा समझने को पुराना चलन बताया जा रहा है। ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश में भी ऐसा ही उल्लेख है—The term Orientalism is now regarded as old-fashioned and potentially offensive as a term denoting people from the Far East. In US English , Asian is the standard accepted term in modern use; in British English, where Asian tends to denote people from the Indian Subcontinent, specific terms such as Chinese or Japanese are more likely to be used.[1]

'प्राच्यवाद और प्राच्य-भारत' नामक पुस्तक में विनोद शाही ने ठीक लिखा है कि ऐसा अध्ययन तभी संभव है जब हम पूरब और पश्चिम को दो ऐसी कोटियों के रूप में स्वीकार कर लें जिनका ऐतिहासिक अस्तित्व है। समस्या यहीं से शुरू होती है। असल में पूरब और पश्चिम का यह विभाजन या इस प्रकार की कोटि-संकल्पना समाज-ऐतिहासिक विकास की कोई यथार्थ या वैज्ञानिक संकल्पना नहीं है। दूसरी ओर यह कहना भी ठीक नहीं है कि वह एकदम से कल्पित और अनैतिहासिक है। दरअसल पूरब और पश्चिम की कोटियों में अंतर्विभाजन का आरम्भ ग्रीको-रोमन सभ्यता के दौर में होता है। ईसा से पहले सिकन्दर द्वारा एशिया के अनेक देशों को जीत लेने की वजह से ही एशियायी और यूरोपीय दोनों ही उपमहाद्वीपों के साहित्य में

Scanned by CamScanner